वार्तालाप-550, कलकत्ता, दिनांक 11.04.08
Disc.CD No.552, dated 18.4.08 at Calcutta

समयः 00.15-07.38

जिज्ञासुः .....कि शिव बाप गुल्ज़ार दादी में प्रवेश नहीं करते हैं। लेकिन अव्यक्त वाणी में कई जगह ऐसे कहा है बापदादा देख रहे हैं, सुन रहे हैं। तो बी.के. वाले कह रहे हैं: जब देख रहे हैं, सुन रहे हैं तो दादा और बाप दोनों ही गुल्ज़ार दादी में प्रवेश करते हैं।

बाबाः बापदादा देख रहे ....

जिज्ञासुः हमने कहा- दोनों बिल्कुल १०० परसेन्ट कंबाइन्ड हैं, साथ हैं। दादा लेखराज ब्रह्मा सूक्ष्मशरीरधारी हमेशा कम्बाइन्ड हैं, साथ हैं, इसलिए बापदादा दोनों का नाम है। इसके बारे में आपसे पूछना था ।

Time: 00.15-07.38
Student: …. that the Father Shiv doesn't enter Gulzar dadi. But it has been stated many times in the *Avyakt vani*: BapDada are seeing, they are listening. So, the B.Ks are saying: When they are seeing, when they are listening, then both *dada* and *bap* enter Gulzar dadi.
Baba: BapDada are seeing….
Student: I replied: Both are 100% combined, they are together. Dada Lekhraj Brahma, the one having a subtle body, is always combined, he is together, that is why there is the name of both Bap [and] Dada. I wanted to ask you about this.

बाबाः ये बात तो कई बार बता दी जा चुकी है कि बाबा कहते हैं तुम मेरे को जितना याद करते हो, मैं तुम्हारे साथ हूँ। हम याद करने वाले बच्चों के बीच में ब्रह्मा की सोल भी कोई बड़ी हस्ती है। और उनमें इतना प्यार भरा हुआ है जिस प्यार के आधार पर उनकी प्रीति परमात्मा के प्रति भी बहुत है। तो जो याद में रहते हैं ब्रह्मा की सोल वो जैसे के शिव बाप उनके साथ ही साथ है उस समय। और जिस समय गुल्जार दादी में प्रवेश करते हैं उस समय तो उनकी विशेष याद जुटी हुई होती है क्योंकि गुल्जार दादी भी शिव शक्ति हैं।

Baba: This has been said many times that Baba says: the more you remember Me, I am with you. The soul of Brahma is also a great personality among us children who remember. And he has so much love within himself, that on the basis of that love he also has a lot of affection for the Supreme Soul. So, the soul of Brahma who stays in remembrance; it is as if the Father Shiv is together with him at that time. And when he enters Gulzar dadi, he stays in a special remembrance because Gulzar dadi is also a *Shivshakti*[1].

अलौकिक जीवन में भी ब्रह्मा बाबा का आकर्षण गुल्जार दादी के प्रति बहुत था। गुल्जार दादी छोटी बच्ची थी और ब्रह्मा बाबा बुजुर्ग थे। ब्रह्मा बाबा की आत्मा बार-2 गुल्जार दादी को अपनी ओर आकर्षित करना चाहती थी वो भाग जाती थी। जैसे आज की मुरली में आया। शक्तियों से शक्ति लेते हुए अपने पुरूषार्थ को आगे बढ़ाते रहने में पांडव सफल हो जाते हैं। तो

[1] The shakti (consort) of Shiv.

सारा पुरूषार्थी जीवन में ब्रह्मा बाबा की कशिश गुल्जार दादी के प्रति रही। और जैसे ही साकार शरीर का बंधन छूटा तो वो मुक्त हो गए। गुल्जार दादी को उन्होंने आधार बनाया और आधार बनाकरके उनका पुरूषार्थ दिन दूना रात चौगुना और चढ़ा। याद में वो तीखे रहे। ये याद ही साबित करती है कि शिव बाप उनके साथ है। बाकी मुरली में तो बोला हुआ है- मैं सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा में नहीं आता हूँ।

In the *alokik* life also, Brahma baba had a lot of attraction for Gulzar dadi. Gulzar dadi was a small girl and Brahma baba was an aged person. The soul of Brahma baba wanted to attract Gulzar dadi towards himself again and again [but] she used to run away. Just as it was stated in today's *murli*: the Pandavas become successful in taking their *purusharth* ahead by taking power from the *Shaktis*. So, in his entire *purusharthi* life (life of making spiritual effort) Brahma baba had attraction for Gulzar dadi and as soon as he lost the bondage of the corporeal body, he became free. He made Gulzar dadi his support. And his *purusharth* went up by leaps and bounds after making her the support. He started remembering (the Father) intensely. This remembrance itself proves that the Father Shiv is with him. As for the rest, it is said in the *murli*: I don't enter Brahma, the resident of the subtle world.

सूक्ष्मवतन वासी तो फरिश्ते होते हैं। फरिश्ते पवित्र होते हैं। पवित्र में बाप नहीं आता है। बाप तो पतित तन में आता है और गुल्जार दादी तो पावन तन है। और साधारण कोई लौकिक ब्राह्मण परिवार का पावन तन नहीं है। अलौकिक ब्राह्मण परिवार में पली हुई कन्या है। तो पावन तन में शिव का प्रवेश तो साबित होता ही नहीं। हाँ, ब्रह्मा बाबा को याद है। गहरी याद है इसीलिए गहराई से बाप दादा के साथ है। नहीं तो शिव बाप जिसमें प्रवेश करते हैं उसको अपनी स्मृति रहती है। शिव बाप का हल्का फुल्कापन ब्रह्मा बाबा को भी हल्का फुल्का बना देता था। गुल्जार दादी तो भारी हो जाती हैं। जितने घंटे प्रवेश करते हैं उतना घंटे उनको रेस्ट लेना पड़ता है। ये हिसाब-किताब देहधारियों का होता है, आत्माओं का आत्माओं के साथ।

The angels (*farishtey*) are the residents of the subtle world. Angels are pure. The Father doesn't enter a pure one. The Father comes in a sinful body. And Gulzar dadi's body is a pure body. And it isn't the pure body of some ordinary lokik brahmin family. She is a virgin who has been sustained in the *alokik* brahmin family. So, the entrance of Shiv is not at all proved in a pure body. Yes, Brahma baba stays in remembrance, he stays in deep remembrance that is why he is with BapDada in a deep way. Otherwise the one in whom the Father Shiv enters, stays in his consciousness. The lightness of Shivbaba used to make Brahma baba light as well. Gulzar dadi feels heavy. She has to rest for as many hours as he enters her. The bodily beings, the souls have accounts with the souls.

शिव ज्योति बिंदू का कोई हिसाब-किताब काई आत्मा के साथ ऐसा नहीं है जो भारीपन महसूस हो। शिव तो ज्योति बिंदू है, हल्का-फुल्का है। कोई कर्मों का बोझ नहीं है। चेहरा-मोहरा बदलने की बात ही नहीं है। मनुष्य आत्मायें जब प्रवेश करती हैं तो चेहरा-मोहरा बदल जाता है। चाहे वो कोई भी आत्मायें प्रवेश करें। इससे ये साबित होता है कि गुल्जार दादी में शिव प्रवेश नहीं करते। दूसरी बात अगर गुल्जार दादी में भी शिव प्रवेश करें, ब्रह्मा में भी शिव प्रवेश करें, शंकर

में भी शिव प्रवेश करे तो शिव तो सर्वव्यापी हो गया। शिव सिर्फ बाप के रूप में एक ही मुकर्रर रथ में प्रवेश करता है। और कोई में प्रवेश नहीं करता। हाँ, जिस मुकर्रर रथ में प्रवेश करता है वो रूद्र, रूद्रमाला के 108 मणकों में प्रवेश करके पार्ट बजाता है। इसीलिए मुरली में भी बोला है- बापदादा बच्चों में प्रवेश कर सकते हैं। बाप का तो मुकर्रर रथ है।

Shiv, the point of light has no such accounts with any soul so that [the one in whom He enters would] feel heavy. Shiv is a point of light, He is weightless. He doesn't have the burden of any actions. There is no question of the face changing at all [of the one in whom He enters]. When human souls enter [someone] then their face changes; no matter which souls enter. This proves that Shiv doesn't enter Gulzar dadi. The other thing is that if Shiv enters even Gulzar dadi, Brahma as well as Shankar then [it means that] Shiv is omnipresent. Shiv enters only the one permanent chariot in the form of a Father. He doesn't enter anyone else. Yes, the permanent chariot in which He enters, that *Rudra*[2] enters the 108 beads of the *Rudramala* (the rosary of Rudra) and plays a part. That is why it is also said in the *murli*: BapDada can enter the children. The Father has a permanent chariot.

जिज्ञासुः बाबा, ... बापदादा देख रहे हैं, सुन रहे हैं क्यों.... ?
बाबाः वो सूक्ष्मवतन की बात बताई। सूक्ष्मवतन वासी जो बापदादा हैं वो देख रहे हैं और सुन रहे हैं।

Student: Baba, … BapDada are seeing, they are listening, why….?
Baba: That was said about the subtle world. Bap [and] Dada, the residents of the subtle world are seeing and they are listening.

समयः 07.40-09.40
जिज्ञासुः बाबा, सुना है आ.ई.वि.वि तथाकथित सरकार के रजिस्ट्रेशन में नहीं आया।
बाबाः हाँ।
जिज्ञासुः तो बाबा कहते हैं कि समाज को मानना है, थोड़ा लौकिक के नियम... जो एफिडेविट करता है, एफिडेविट में जो आईंड; तथाकथित जो आईंड लॉ, उसको मानता है। तो क्यों मानता है बाबा?

Time: 07.40-09.40
Student: Baba, I have heard that the A.I.V.V [institution] wasn't registered under the so-called government.
Baba: Yes.
Student: Then, Baba says that we should give importance to the society, some rules of the *lokik* [world]… the affidavits that are made and in the affidavits, the Ind… we accept the Ind Law of the so-called [government], why do we accept it Baba?

बाबाः कौन मानता है?
जिज्ञासुः एफिडेविट निश्चय अनिश्चय पत्र लिखते हैं। एफिडेविट जो करता है, नोटरी पब्लिक से

[2] The one who takes on a fierce form (*raudra roop*).

साईन कराते है वो तो सरकारी है ना, तथाकथित सरकारी।

बाबाः वो तो 98 में जब केस हुआ और जो सादा कागज़ पर लिखे हुए निश्चय पत्र हैं, अवज्ञा पत्र हैं, माफीनामे हैं उनको उन्होंने फाड़ दिया, जर्ज ने कि इसपे कोई मोहर नहीं है, कोई टिकिट नहीं लगी हुई हैं, कोई सरकारी स्टैम्प नहीं है। हम इन कागज़ों को नहीं मानेंगे। तब से ये काम कराना शुरू किया गया है, उससे पहले थोड़े ही था।

जिज्ञासुः तो 92 से जब होता है आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्व विद्यालय प्रतिष्ठा। वहाँ से सरकारी नियम से रेजिस्ट्रेशन हुआ?

बाबा: बाबा ने मुरली में बोला है हमारी है ईश्वरीय गवर्मेन्ट। उनकी है आसुरी गवर्मेन्ट। हम आसुरी गवर्मेन्ट से रेजिस्ट्रेशन क्यों करावें? हम उनसे रेजिस्ट्रेशन करावेंगे तो उनके अंडर में चलना पड़ेगा।

Baba: Who accepts it?
Student: The affidavit, the letter of faith and uncertainty that is written; the affidavit that is made is signed by the Notary public, so, that is governmental, isn't it? It is [related to] the so-called government.
Baba: That is [because] in 98, when the [court] case was heard, the judge tore off the letters of faith, letter of disobedience and letter of apology saying: "There isn't any (government) seal on this, there isn't any stamp attached to it, there isn't any government stamp. We won't accept these papers". It is since then that this work was started; it didn't happen before that.
Student: Did the registration of A.I.V.V take place according to the law of the government in '92 when it was established?
Baba: Baba has said in the *murli*: "Ours is the Godly government, theirs is the demonic government. Why should we get it registered under the demonic government? If we get it registered under them, we will have to be under their control.

जिज्ञासुः ब्रह्मा कुमारी तो किया है।

बाबा: जो किया है वो अपनी मनमत पर किया। शिवबाप ने तो मुरली में डायरेक्शन साफ दे दिया है कि उनकी है भ्रष्टाचारी गवर्मेन्ट, हमारी है श्रेष्ठाचारी गवर्मेन्ट। हम श्रेष्ठाचारी राज्य की स्थापना करने जा रहे हैं। हम भ्रष्टाचारी गवर्मेन्ट से अपने को रेजिस्टर्ड क्यों करावें जो अंडर में हमको चलना पड़े?

Student: The Brahmakumaris did it.
Baba: Whatever they have done is according to their self opinion. The Father Shiv has given a clear direction in the *murli*: "Theirs is the unrighteous government, ours is the righteous government. We are going to establish the righteous kingdom. Why should we get ourselves registered under the unrighteous government so that we have to be under their control?"

समय: 09.45-10.10

जिज्ञासुः बाबा, आज जो रमेश भाई ने पूछा कि कानून तो बदलेगी किस तरफ इशारा दिया...।

बाबा: हाँ जी, वो तो बदल ही रही है क्षणे-2। जो गद्दी पर बैठा, जो मिनिस्टर बनके आया वो नया कानून निकाल देता है। लेकिन जो भी कानून बनेगी हमारे हित में बनेगी। दुनियाँ के सारे कायदे कानून हमारे लिए बन रहे हैं।

Time: 09.45-10.10
Student: Baba today brother Ramesh asked, the rules and laws will change[3]; this was an indication for what? …..
Baba: Yes, it is indeed changing every moment. Whoever sat on the throne, whoever comes as a minister frames a new law. But whatever rules are made, they will be for our benefit. All the rules and laws of the world are being made for us.

समय: 10.10-11.03
जिज्ञासु- चैत्र मास में सन्यास लेते है, ये क्या है?
बाबा- चैत्र मास है वर्ष का पहला महिना। जैसे कल्प की शुरुवात होती है तो पहले-2 युग आता है संगमयुग और संगमयुग में सारी दुनिया से बेहद का सन्यास लेना जरूरी है। तो उसकी यादगार में भक्तिमार्ग में उन्होने चैत्र मास में सन्यास लेना शुरु कर दिया।

Time: 10.10-11.03
Student: Baba, people practice renunciation in the month of *Chaitra*[4], what does this mean?
Baba: The month of *Chaitra* is the first month of the year. Just as when the beginning of a *kalpa* (cycle) takes place, the first age which comes is the Confluence Age and in the Confluence Age it is necessary to renounce the entire world in an unlimited sense. So, as a memorial of this, they have started practicing renunciation in the month of *Chaitra*.

समयः 12.12-13.00
जिज्ञासुः बाबा ब्रह्मा, विष्णु और शंकर – ये माता को हरण करने के लिए आते हैं, और वो माता अपने योगबल से तीनों को अपना बच्चा बना देते हैं। बेहद में कौन है और हद में कौन है वो?
बाबाः जो छोटी माँ का पार्ट है वो भारत माता शिव शक्ति अवतार का पार्ट है। वो शिव की डायरेक्ट शक्ति है। जो शिव शक्ति बनाके अपने को चलते हैं उनकी नज़र कोई भी देहधारी में डूबती नहीं है। ब्रह्मा, विष्णू, शंकर भी उन्हें बच्चे जैसे दिखाई पड़ते हैं।

Time: 12.12-13.00
Student: Baba, Brahma, Vishnu and Shankar go to abduct the mother and that mother turns all three of them into her children based on her *yogbal* (power of *yoga*). Who is she in the limited and unlimited sense?
Baba: The part of the junior mother is that of *Bharat mata shivshakti avatar* (Mother India the incarnation of the *shakti*[5] of Shiv). She is the direct *shakti* of Shiv. Those who make themselves a *Shivshakti*, their vision doesn't become engaged with any other bodily being. Even Brahma, Vishnu and Shankar are visible to them as children.

[3] probably referring to the Avyakt vani of the class that day
[4] First month of the Hindu calendar.
[5] Consort of Shiv

समयः 13.05-14.32

जिज्ञासुः प्रभुता पाय काहि मद नाहि। इसका अर्थ क्या होता है?

बाबाः प्रभुता कहते हैं कोई कुर्सी मिल जाए, गद्दी मिल जाए, कोई मर्तबा मिल जाए उसको कहते हैं प्रभुता। पाय माना मिल गई। जिसको कोई गद्दी मिल गई, मर्तबा मिल गया और वो लम्बे समय तक जब मर्तबा चलता है तो उसको अहंकार आ जाता है कुर्सी का, मर्तबे का। फिर वो अहंकार में रहकरके बात करता है। उस बात का देहभान चढ़ जाता है। और ये मनुष्य का स्वभाव है खास करके द्वापर, कलियुग में। दुनियाँवी कोई भी मान मर्तबा मिलता है। तो मद में आ जाता है, अहंकार में आ जाता है।

Time: 13.05-14.32
Student: What is the meaning of '*Prabhuta pay kahi mad nahi*'?
Baba: When someone gets a (high) seat, a throne (an authority), respect; that is called *prabhuta*. *Pay* means, [someone] received it. (Suppose) someone got a throne (authority), he got respect and when that respect lasts for a long time, he becomes egoistic about his authority, about his respect. Then he speaks egoistically. He becomes body conscious because of it. And this is the nature of human being, especially in the Copper and Iron Ages: when he receives any worldly respect, he becomes intoxicated with it, he becomes egoistic.

समयः 15.41-16.25

जिज्ञासुः बाबा, अव्यक्त वाणी में कहते एक हाथ की ताली बजाओ। तो एक हाथ की ताली बजाओ इसका मीनिंग क्या? साइलेन्स के लिए?

बाबाः हाथ कहते हैं बुद्धि रूपी हाथ। एक हाथ तो ये स्थुल है। लेकिन स्थुल हाथ की बात नहीं है। है ये अपना बुद्धि रूपी हाथ। ये हमारा जो बुद्धिरूपी हाथ है और परमात्मा बाप का जो बुद्धिमानों की बुद्धि है उसका जो बुद्धि रूपी हाथ है। उन दोनों की ताली बजाओ। और किसी मनुष्य के साथ ताली न बजने पाए।

Time: 15.41-16.25
Student: Baba says in the *Avyakt vani*, "Clap with a single hand". So, what is the meaning of 'clap with a single hand?' Is it in order to maintain silence?
Baba: The hand like intellect is called a hand. One is this physical hand. However, it is not about the physical hand. This is our hand like intellect. Our hand like intellect and the hand like intellect of the Supreme Soul Father, who is the intellect of the intellectuals; clap with the help of both these hands. We should not clap our hands with any other human being.

समयः 16.26-17.53

जिज्ञासुः लौकिक दुनिया में जो हाथ जोड़ते हैं, नमस्कार करते हैं, तो उसका मीनिंग क्या है बाबा?

बाबाः एक है दायां हाथ और एक है बायां हाथ। बायां हाथ होता है पत्नी का सूचक। दायां हाथ होता है अपना। तो दोनों की बुद्धि रूपी हाथ मिलकरके रहे। उसको कहते हैं हाथ जोड़ना। क्रिश्चियनस् में हाथ मिलाते हैं। अपना हाथ सामने वाले के दायें हाथ से मिलाते हैं। अर्थात् बुद्धि के जो संस्कार हैं वो दूसरे से मिले हुए रहें। आपस में खट-पट न हो। संगमयुग की सूक्ष्म बातों को भक्तिमार्ग में उन्होंने स्थूल में उठाय लिया है। उनहोंने बुद्धिरूपी हाथ की बात समझाई और भक्तों ने उसे स्थूल हाथों में उठाय लिया।

Time: 16.26-17.53
Student: Baba what is the meaning of *namaste* (greetings) that people in the *lokik* world do by joining both their hands?
Baba: One is the right hand and the other is the left hand. The left hand symbolizes the wife and the right hand is ours. So, the hand like intellect of both should be harmonized. That is called joining hands. The Christians shake hands. They shake their hand with the right hand of the person in front, meaning the *sanskars* of the intellect should be harmonized with the other person, there shouldn't be a conflict between both. On the path of *bhakti* they have understood the subtle topics of the Confluence Age in a physical way. They (those who wrote the scriptures) explained about the hand like intellect and the devotees thought it to be the physical hand.

समयः 17.55-18.12
जिज्ञासुः मुस्लिम भी अल्लाह हू अकबर करते है तो हाथ ऊपर में करता है। उसका बेहद में अर्थ क्या है?
बाबाः वो समझते हैं अल्लाह ऊपर में ही होता है, ऊपर से ही हमको सब कुछ देता है। तो हाथ ऊपर को उठाते हैं।

Time: 17.55-18.12
Student: Baba, the Muslims too, when they say, 'Allah ho Akbar', they raise their hands above. What is its meaning in an unlimited sense?
Baba: They think Allah (God) is above, He gives us everything from above itself. So, they raise their hands above.

समयः 18.15-19.10
जिज्ञासुः द्रौपदी का पांच पति था। बेहद में कौन है?
बाबाः पति कहा जाता है रक्षक को। कोई ब्रह्माकुमारी है सेन्टर इंचार्ज बनाई जाती है। तो सेन्टर खोलने वाला कोई तो मुखिया भाई होता ही है उसकी जिम्मेवारी हो जाती है, जिस कन्या को निमित्त बनाया गया सेन्टर चलाने के लिए उसकी सुरक्षा करे। अगर वो वहाँ से ट्रान्सफर होके कहीं दूसरी जगह चली जाए, तिसरी जगह चली जाए, चौथी, पांचवी जगह चली जाए। तो उस हिसाब से ये पांच पति हो जाते हैं। बाकी कोई पांच पति भारतीय नारी को तो होते नहीं हैं।

Time: 18.15-19.10
Student: Baba, Draupadi had five husbands. Who are they in an unlimited sense?
Baba: The protector is called the husband. (Suppose) some Brahmakumari is given the charge of a center, so there is certainly some or the other brother who opens the center. It becomes his

responsibility to protect the virgin who is made in charge to run the center. If she is transferred from that center to some other place, to a third, fourth, fifth place; she has five husbands according to that. As for the rest, an Indian woman certainly doesn't have five husbands.

समयः 19.50-20.40

जिज्ञासुः बाबा, ब्राह्मणों की दुनियाँ में रावण जैसे ब्राह्मण भी है और मेघनाथ जैसे भी है। ....

बाबाः हाँ , हाँ, गरजने वाले ब्राह्मण भी हैं।

जिज्ञासुः तीन प्रकार का है**.....**

बाबाः और कुंभकर्ण की नींद में सोने वाले ब्राह्मण भी हैं।

जिज्ञासुः मेघनाथ का क्या अर्थ है ?

बाबाः मेघ कहते हैं बादल को। वो बादल की तरह गड़गड़ाहट ज्यादा करते हैं। शोर-गुल ज्यादा कर देते हैं, आवाज़ ज्यादा करते हैं उनको कहते हैं मेघनाथ।

Time: 19.50-20.04
Student: Baba, in the world of brahmins, there are such brahmins who are like Ravan and there are such ones who are like Meghnath[6] too.
Baba: Yes, yes. There are also brahmins who thunder.
Student: There are three types [of brahmins]….
Baba: There are also brahmins who sleep in the sleep of Kumbhakaran[7].
Student: What is the meaning of Meghnath?
Baba: Clouds are called *'Megh'*. They thunder more like the clouds. They make more noise, they make more sound; such ones are called Meghnath.

समयः 21.12-22.30

जिज्ञासुः बाबा ए टू ज़ेड सब धोखेबाज़ हैं। ए और ज़ेड कौन है।

बाबाः अलफ माना ए पहला और ज़ेड माना आखरी। माना 500 करोड़वी आत्मा और पहला नंबर आत्मा। कलियुग में आकरके सारी दुनियाँ धोखेबाज़ है। एक शिवबाप ही सच्चा है और बाकी सब झुठे हैं। अब चूँकि शिवबाप जो है वो ए में प्रवेश करता है, अलफ में।

जिज्ञासुः तो नंबरवन प्रजापिता हो गया।

बाबा: नंबर वन उस आधार पर है कि शिवबाप उसे पहले नंबर में चुन लेता है। आत्मिक स्थिती में रहने में आदि से लेकरके अंत तक जितनी प्रजापिता की आत्मिक स्टेज बनती है उतनी और कोई आत्मा की आत्मिक स्टेज नहीं बनती। इसलिए उसे चुना जाता है।

Time: 21.12-22.30
Student: Baba, A to Z, all are the ones who deceive. Who are A and Z?
Baba: Alaf means 'A', the first one and 'Z' means the last one, meaning the 5 billionth soul and the first soul. After coming to the Iron Age, the [people of the] entire world deceive. Only the

[6] Son of Ravan.
[7] Brother of Ravan who used to sleep a lot.

one Father Shiv is true and all the rest are false ones. Well, because the Father Shiv enters 'A', Alaf….
Student: So, Prajapita is No. 1.
Baba: He is No.1 based on the fact that the Father Shiv chooses him first. In [the subject of] remaining in the soul conscious stage, the extent to which Prajapita becomes stable in the soul conscious stage from the beginning to the end, no other soul becomes stable in the soul conscious stage to that extent. That is why he (Prajapita) is chosen.

समयः 23.48-25.41

जिज्ञासुः बाबा कृष्ण माने आकर्षण करने वाला।

बाबाः हाँ, जी।

जिज्ञासुः राधा माने क्या होता है बाबा?

बाबाः राम शब्द; जैसे रा है राम में। रमण कराने वाला है। राध में छुपा हुआ है प्यार। ऐसा प्यार और किसीका हो ही नहीं सकता। सच्चाई से जो खेल खेलता है उसमें और जो झुठा खेल खेलता है उसमें, ज्यादा मज़ा किसमें आता है? सच्चाई में ज्यादा मज़ा आता है। तो भगवान के साथ राधा ने जितना सच्चा प्यार किया, जितना सच्चा डांस किया उतना सच्चा डांस और कोई ने किया ही नहीं और उतना आनंद और किसीने लिया ही नहीं। इसीलिए राधा का नाम राधा पड़ा। धारणा शक्ति ज्यादा है। प्यार को भी धारण करने की शक्ति चाहिए। ईश्वर प्यार का सागर तो है लेकिन उस प्यार के सागर को भी पूरा हप करने की शक्ति चाहिए।

Time: 23.48-25.41
Student: Baba, Krishna means the one who attracts.
Baba: Yes.
Student: Baba, what does Radha mean?
Baba: The word Ram; for example there is 'Ra' in (the word) Ram, the one who delights. Love is hidden in [the word] *'Radh'*. Nobody else can have such a love at all. Which game involves more fun, is it a game played with truthfulness or a game played in a false way? There is more fun in truth. So, the extent to which Radha loved God truly, the extent to which she danced truly with Him, nobody else danced with Him with such truthfulness and nobody else experienced that much happiness either. That is why Radha was named Radha. She has more power to assimilation [anything] (*dhaarna shakti*). Power (Shakti) is needed to assimilate love as well. God is certainly the Ocean of love but the power to absorb that entire Ocean of love is also necessary.

समयः 25.55-28.15

जिज्ञासुः बाबा, कृष्ण को छोटी उंगली से गोवर्धन पहाड़ उठाते हुए दिखाते हैं।

बाबाः हाँ, जी।

जिज्ञासुः बेहद का अर्थ क्या है?

बाबाः पांच उंगलियाँ हैं। पांच उंगलियों में सबसे पावरफुल भी है और सबसे कमजोर उंगली भी है। ऐसे ही माला है। माला में सबसे पावरफूल मणका भी है और सबसे कमजोर मण्का भी है। कौनसे नंबर का मणका सबसे पावरफूल है? और कौनसे नंबर का सबसे कमजोर है जो नैया

डोलेगी-हिलेगी लेकिन डूबेगी नहीं क्योंकि वो मणका फिर भी भगवान बाप के उतना ही नज़दिक है जितना पहला मणका है। इसीलिए ऐसी कमजोर आत्मा को भी 16108 गऊओं की पालना करने के निमित्त बनाया जाता है। 16108 गऊओं का पहाड़ भी पालना करता है। कौन? कनिष्ठिका उंगली। ये कनिष्ठिका उंगली की विशेषता है या उस कनिष्ठिका उंगली में प्रवेश करने वाले की विशेषता है? चलाने वाला कौन है उस कनिष्ठिका उंगली को? स्वंय दादा लेखराज, कृष्ण की सोल। इसीलिए गोवर्धन पहाड़ को छोटी सी उंगली के ऊपर धारण किये हुए दिखाया गया है।

Time: 25.55-28.15
Student: Baba, Krishna is shown to lift the Goverdhan Mountain with the help of his little finger.
Baba: Yes.
Student: What is its unlimited meaning?
Baba: There are five fingers. There is the most powerful as well as the weakest finger among the five fingers. Similar is a rosary. There is the most powerful bead as well as the weakest bead in the rosary. The bead of which number is the most powerful and the bead of which number is the weakest [for which it has been said:] the boat will shake and quake but it will not drown because that bead is still as close to God the Father as the first bead? That is why even such a weak soul is made an instrument to sustain the 16108 cows. It sustains the mountain of the 16108 cows. Who? The little finger. Is this the specialty of the little finger or is it the specialty of the one who enters that little finger? Who is the one who controls that little finger? Dada Lekhraj himself, the soul of Krishna. That is why the Goverdhan Mountain is shown to be held on a little finger.

समयः 28.58-29.30

जिज्ञासुः भरत ने गद्दी चलायी राम के जूते रख कर। कौनसा राम?

दूसरा जिज्ञासुः राम जब वनवास में चला गया, तो भरत ने क्या किया, राम की जूती लेकरके...

बाबाः पादुका ली।

जिज्ञासुः हाँ। पादुका लेकरके गद्दी चलायी था।

बाबाः पादुका माना श्रीमत, पांव, पनही। श्रीमत रूपी पनही को सर माथे पर रखा और उसके आधार पर राज्य चलाया। अपनी अकल नहीं चलाई।

Time: 28.58-29.30
Student: Bharat placed Ram's *paduka*[8] and ruled the kingdom. It is about which Ram?
Another student: When Ram went on an exile, Bharat took Ram's shoes….
Baba: He took his *paduka*.
Student: Yes. He ruled the kingdom taking his *paduka*.
Baba: *Paduka* means shrimat, leg, slipper. He placed the slipper of shrimat on his head and based on it he ruled the kingdom. He didn't use his intellect.

समयः 29.35-33.15

जिज्ञासुः बाबा देवताओं को अलग-अलग वाहन क्यों दिखाया हैं?

[8] Wooden slippers.

बाबाः हाँ, जिस देवता ने जैसा-2 आधार लिया उसका वैसा-2 वाहन दिखा दिया। विष्णू को गरूड़ दिखाया गया है। गरूड़ सर्पों को खा जाता है। सर्प विषयी विकारी कहा जाता है। विष्णू का अर्थ ही है नो विष एट ऑल। विषय वासना का जहाँ नाम निशान न हो वो ही विष्णू है। तो वो आधार कैसे का लेगा? विषय विकार को नष्ट करने वाले पंछी का आधार लेगा तब ही तो ऐसा बनता है। ऐसे ही सरस्वती का वाहन.....
जिज्ञासु: हंस।

Time: 29.35-33.15
Student: Baba, why are the deities shown to have different *vahan*[9]?
Baba: Yes, whichever deity took whichever type of support; he is shown to have that kind of *vehicle*. Vishnu is shown to have an eagle [as his *vehicle*]. An Eagle eats snakes. A snake is said to be vicious. The very meaning of Vishnu is, 'no *vish* (poison) at all'. The one in whom there isn't the name and trace of poison is himself Vishnu. So, what kind of support will he take? He will become that only when he takes the support of a bird that destroys the poison of vices. Similar is the vehicle of Saraswati….
Student: Swan.

बाबा: हंस है। माना नीर-क्षीर विवेकी है। पानी को अलग और दूध को अलग कर देता है। मोती-2 को चुंग लेता है, कंकड़ को छोड़ देता है। ऐसी हंसवाहिनी बुद्धि सरस्वती की कही जाती है। सरस्वती ज्ञान की देवी है। तो आधार भी ऐसे वाहन का लेती है। ऐसे ही कार्तिकेय। कार्तिकेय को सवारी कौनसी दिखाई है? मोर। हाँ, कार्तिकेय शंकरजी का बड़ा बच्चा दिखाया जाता है। मोर किस बात का सूचक है? अपना भारतीय पक्षी मोर माना जाता है। राष्ट्रिय पक्षी भारत का मोर माना जाता है। मोर पवित्र पक्षी है। विकार से संतान पैदा नहीं करता विकारी इन्द्रियों से पैदाईश नहीं करता। इसीलिए मोर की सवारी कार्तिकेय को दिखाई गई है। तो जितने भी वाहन हैं उन वाहन का रहस्य अलग-2 है सब देवताओं के साथ।
जिज्ञासु: लेकिन कार्तिकेय को बोला तिक-2 करने वाला।
बाबा: जब तक ज्ञान बुद्धि में नहीं बैठा है, सम्पन्न नहीं बना है तब तक तिक-2 है और जब सम्पन्न बन जाता है तो तिक-2 खतम। पवित्र बुद्धि बन जाती है।

Baba: It is a swan, meaning it is the one that separates milk from water. It separates milk from water. It picks the pearls and leaves the stones. Such a swan like intellect is said to be that of Saraswati. Saraswati is the *devi* (female deity) of knowledge. So, she also takes the support of such a vehicle. Similarly, Kartikeya. What vehicle is Kartikeya shown to be riding? A peacock. Kartikeya is shown as the eldest son of Shiv. What does a peacock symbolize? Peacock is considered to be our Indian bird. The peacock is considered to be the national bird of India. The peacock is a pure bird. It doesn't reproduce through vices, through the vicious organs. That is why Kartikeya has been shown to ride a peacock. So, all the vehicles have a different secret related to their (riding) deity.

[9] Animals used in riding; vehicle

Student: But Kartikeya has been said to be the one who does *tik – tik* (talking wasteful or unnecessary things).
Baba: He does *tik – tik* as long as the knowledge is not seated in his intellect, as long as he is not complete and when he becomes complete, the *tik – tik* finishes. He becomes the one having a pure intellect.

समयः 34.55-36.10

जिज्ञासुः लक्ष्मी का वाहन तो उल्लू दिखाता है।

बाबाः लक्ष्मी का वाहन उल्लू। हाँ जी।

जिज्ञासुः .... इसका बेहद में अर्थ क्या?

बाबाः जितने भी आज के बड़े-2 धनी मानी लोग हैं वो सब उल्लू के मुआफिक हैं। और ब्रह्मा कुमारियों में जो सबसे ऊँच पद पाने वाली है वो है लक्ष्मी और वो ऐसे उल्लूओं के ऊपर ही सवारी करती है। इसीलिए ये वाहन बना दिया गया है संगमयुग की यादगार।

जिज्ञासु: रात में दिखाई देता, दिन में नहीं दिखाई देता है।

बाबा- उनको ये अज्ञान की रात है। अज्ञान की रात में उन्हें दुनियाँ दिखाई पड़ती है। जब ज्ञान का सवेरा सतयुग होता है तो उनके लिए वो दुनियाँ अंधेरी हो जाती है।

जिज्ञासु: बाबा, गणेश को चूहा क्यों दिखाया है?

बाबा: चूहा खोखला कर देता है मकान को।

Time: 34.55-36.10
Student: Lakshmi's vehicle is shown to be an owl.
Baba: The vehicle of Lakshmi is owl. Yes.
Student: …. What is its meaning in an unlimited sense?
Baba: All the great wealthy and famous people of today are like owls. And the one who attains the highest position among the brahmakumaris is Lakshmi and she rides such owls only. That is why this vehicle has been shown as a memorial of the Confluence Age.
Student: It is able to see at night but can't see in daylight.
Baba: This is the night of ignorance. They are able to see the world in the night of ignorance. When it is the day of knowledge, the Golden Age, the world becomes [full of] darkness for them.
Student: Baba, why is Ganesh shown to ride a mouse?
Baba: A mouse hollows the house.

समयः 36.25-37.15

जिज्ञासुः बाबा सतयुग में हम सब आत्मिक स्थिति में रहेंगे।

बाबाः हां।

जिज्ञासुः तो हम जो आत्मा हैं ये भूल जायेंगे?

बाबाः अरे, आत्मिक स्थिती में रहेंगे और भूल जायेंगे ये दो बातें कैसे हो गई?

जिज्ञासु: नहीं, हम जो आत्मा है ये भूल जायेंगे?

बाबा: जब आत्मिक स्थिती में रहेंगे तो भूले हुए कहाँ रहे? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) क्या भूल जायेंगे?

जिज्ञासु: आत्मा को भूल जायेंगे।

बाबा: अरे, आत्मा ही याद रहेगी। देह को भूल जायेंगे, देह के ऊपर नज़र ही नहीं जाएगी। अभी यहाँ हम प्रैक्टिस कर रहे हैं आत्मा को देखने की। ये प्रैक्टिस वहाँ पक्की हो जाएगी।

Time: 36.25-37.15
Student: Baba, all of us will be in the soul conscious stage in the Golden Age.
Baba: Yes.
Student: Then, will we forget that we are a soul?
Baba: Arey, we will be in the soul conscious stage and [also] forget [the soul]; how will both things happen?
Student: No, will we forget that we are a soul?
Baba: When we remain in the soul conscious stage, how are we the ones who have forgotten [the soul]? (Student said something.) What will we forget?
Student: We will forget the soul.
Baba: Arey, we will remember only the soul. We will forget the body. Our eyes will not go on the body at all. The practice that we are doing here, of seeing the soul; this practice will become firm over there.

समयः 37.20-39.00

जिज्ञासुः बाबा, बारह राशि जो हैं, मेष राशि, वृषभ राशि। जितने भी राशियाँ हैं वो किस आधार से होता है?

बाबाः दुनियाँ में जितने भी मनुष्य हैं उन सबको 12 भागों में बाँटा गया है। कोई मनुष्य किस राशि से कनेक्टेड है, कोई मनुष्य किस राशि से कनेक्टेड है और दुनियाँ के जितने भी धर्म हैं, उन धर्मों के जो 12 मुखिया आत्मायें हैं वो भी 12 भागो में बाँटी गई हैं। चाहे क्रिश्चियन धर्म हो, मुस्लिम धर्म हो, देवता धर्म हो, क्षत्रिय धर्म हो। उनके जो मुख्य आत्मायें हैं वो भी 12 भागों में बाँटे गए हैं। यानी कुल टोटल कैटगरी 12 प्रकार की हैं इसीलिए राशियाँ भी 12 प्रकार की मानी गई हैं।

जिज्ञासु: बाबा, मेष राशि को प्रतिनिधित्व करने वाला कौन सा धर्म है, धर्म स्थापक?

बाबा: ये सब राशियों का ज्ञान जब ज्योतिष वाले निकलेंगे तब वो डिटेल में बतायेंगे। क्योंकि जितने भी थ्योरी हैं, जितने भी थेरपी हैं वो सब इस ज्ञान से निकली हैं। ज्ञान से कनेक्टेड है। अभी बहुत कुछ निकलना बाकी है। भेड़-बकरी का तो मालूम होना चाहिए, ज्ञान में भेड़-बकरियाँ कौन है।

जिज्ञासु: भेड़-बकरियाँ बी.के वालों के लिये कहा गया है।

बाबा: बी.के वाले सारे थोड़े ही है भेड़-बकरी।

दूसरा जिज्ञासु: बाबा, दस धर्म का तो मालूम है लेकिन दो धर्म का नहीं मालूम।

बाबा: सब मालूम हो जायेगा धीरे-2।

Time: 37.20-39.00
Student: Baba, the 12 zodiac signs that there are; (for example) the Aries, Taurus [etc.]. All the zodiac sings are based on what?

Baba: All the human beings of the world have been divided into 12 categories. Some human being is connected to some zodiac sign and someone else is connected to some other zodiac sign. And all the religions of the world; the 12 leading souls of those religions, they too have been divided into 12 categories. Whether it is the Christian religion, the Muslim religion, the Deity religion, the Kshatriya religion; the main souls of those religions have also been divided into 12 categories, meaning there are 12 types of categories in total. That is why the zodiac signs are also believed to be of 12 types.
Student: Baba, which religion, religious father represents the Aries sign?
Baba: When the astrologers come (in knowledge) they will explain the knowledge of zodiac signs in detail because all the *theories*, all the *therapies* have emerged from this knowledge. They are connected to knowledge. A lot is to come out yet. You should know about the sheep and goats, who are the sheep and goats in knowledge.
Student: The B.Ks are said to be sheep and goats.
Baba: All the B.Ks are not sheep and goats.
Student: Baba, I know about the 10 religions but not about the remaining two.
Baba: You will come to know everything gradually.

समयः 39.42-44.03

जिज्ञासुः बाबा, जैसे नौधा भक्ति बोला है ऐसे हमारा याद में नौ कैटागरी का जो याद है; नौ कैटागरी का याद का बाबा हमको दो तरीका मालूम है।

बाबाः दो तरीका मालूम है?

जिज्ञासुः और कुछ मालूम नहीं है।

बाबाः क्यों? यज्ञ के आदि से लेकरके अब तक देखें कितने-2 तरिके हो चुके। यज्ञ जब शुरू हुआ था तो क्या कर रहे थे? ओम-2 ध्वनी का उच्चारण करते थे। समझते थे यही याद है। बाद में फिर वो ओम मंडली समाप्त हो गई। बड़ी लाईट के आकार के रूप में याद करना शुरू कर दिया। लाईट का गोला। उसके बाद मम्मा ने नई बात निकाली। आत्मा परमात्मा तो एक ही जैसे तो हैं, ऐसे तो नहीं है कि शिव बड़ा गोल लाल लाईट का गोला है और आत्मा छोटी है तो अंगुष्ठाकार है। नहीं। आत्मा भी ज्योतिबिंदू और परमात्मा शिव भी ज्योतिबिंदू। हाँ, उस ज्योतिबिंदू का जो रोशनी है, आभा है वो उतना ही बड़े आकार वाला है और आत्माओं का छोटे आकार वाला है। इसीलिए आत्माओं को अंगुष्ठाकार दिखा दिया और लिंग को बड़ा लाल लाईट का गोला दिखा दिया। तो लाल लाईट के गोले में जैसे बिंदू हो गया।

Time: 39.42-44.03
Student: Baba, just as it is said, '*naudha bhakti*'; there are 9 categories of our remembrance; I know only 2 ways of remembrance from among them.
Baba: You know 2 ways?
Student: I don't know the other ways.
Baba: Why? You can see from the beginning of the *yagya* till now how many ways [of remembrance] there have been. What were they doing when the *yagya* had begun? They used to say 'Om-2'; they thought, "This itself is remembrance". Later on, that Om Mandali was over. They started remembering (Shivbaba) in a big form of light. A ball of light. After that, Mamma revealed a new concept, "The soul and the Supreme Soul are alike. It isn't that Shiv is a big ball of red light and the soul is small hence it is the size of a thumb. No. The souls as well as the

Supreme Soul Shiv are points of light". Yes, the light, the radiance of that point of light is that big and the [radiance] of the soul is of a smaller size. That is why the soul was shown to be the size of a thumb and the ling was shown as a big ball of red light. So, it is like a point in the ball of red light.

फिर नई बात निकली कि भगवान तो साकार सृष्टि पर आया हुआ है। अकेला बिंदू काम कैसे करेगा, ज्ञान कैसे सुनाएगा? तो ब्रह्मा के तन में वो ज्योतिबिंदू को याद करना शुरू कर दिया। कितने प्रकार हो गए? बाद में पता चला कि ब्रह्मा के तन से तो सिर्फ वाणी चली है। ज्ञान अमृत तो नहीं निकला जिसे गीता ज्ञानामृत कहें। क्योंकि वो मंथन तो हुआ ही नहीं। और भगवान आकरके सिर्फ सुनाके चला जाता है क्या कि सुनाई हुई वाणी को समझाता भी है? समझा के जाता है। और समझाके भी नहीं जाता है, प्रैक्टिकल कर्म करके जाता है। तो तीन रूप ये हो गए। एक सुनने सुनाने वाला रूप, एक समझने और समझाने वाला रूप और आखरीन प्रैक्टिकल कर्म करके दिखाने वाला रूप। तो भक्तिमार्ग में नौ प्रकार की भक्ति है, नौ ही मुख्य धर्म हैं जो भगवान को मानने वाले हैं। तो नौ प्रकार की याद हो गई।

Again a new theory was revealed, God has certainly come in the corporeal world. How will a point work alone? How will He narrate knowledge? So, they started remembering the point of light in the body of Brahma. How many types does that make? (Someone said: four) Later on we came to know that the *vani* was only narrated through the body of Brahma. The nectar of knowledge didn't come out so that it can be called *Gita gyanamrit* (the nectar of the knowledge of the Gita), because the churning did take place at all. In addition, does God come and just narrate knowledge and go away? Or does He also explain the *vani* that He narrates. He explains it [to us] and then goes. And he doesn't go just after explaining, He does the act in practical. So, there are the three forms. One is the form of listening and narrating; one is the form of understanding and explaining and finally comes the form of the one who does it in practical. So, there are nine types of bhakti in the path of *bhakti,* there are only nine main religions that believe in God, so there are nine types of remembrances.

समयः 46.53-48.20

जिज्ञासुः बाबा, अव्यक्त वाणी में एक प्वाइंट है – समय आपको पुकार रहा है या आप समय को समीप ला रहे हैं? इसमें रचयिता कौन?

बाबाः बताओ। समय आपको पुकार रहा है या आप समय को समीप ला रहे हो? इन दोनों में श्रेष्ठ कौन है? रचयिता कौन है और रचना कौन है? समय हमको पुकारे और हम उसके पुकारने पर खींचे चले जायें वो ज्यादा अच्छा है या हम समय को अपनी ओर खींच ले वो ज्यादा अच्छा है?

जिज्ञासु: हम समय को खींच लें।

बाबा: हाँ, समय जड़ है और आत्मा चैतन्य है। चैतन्य आत्मा को रचयिता होना चाहिए समय का। समय को परिवर्तन करने वाले कोई तो निमित्त बनेंगे। जो समय को परिवर्तन करने वाले निमित्त बनेंगे वो ही प्राप्ती करने वाले बनेंगे। समय ने परिवर्तन कर दिया। तो पुरूषार्थी किस बात का हुआ? अपने पुरुषार्थ से तो परिवर्तन नहीं किया।

Time: 46.53-48.20
Student: Baba, there is a point in the *Avyakt vani*, "Is time calling you or are you bringing the time closer?" Who is the creator here?
Baba: Tell me. "Is time calling you or are you bringing the time closer?" Who is elevated between both? Who is the creator and who is the creation? Is it better if the time calls us and we go, on being called by it o r is it better if we bring the time closer?
Student: We should bring the time closer.
Baba: Yes, time is inert and the soul is living. The living soul should be the creator of time. Some souls will certainly become instruments in transforming the time, [won't they?] Only those who become instruments in transforming the time will become the ones who make attainments. If the time transformed you then in what way are you a *purusharthi* (the one who makes spiritual effort)? You did not transform through your own *purusharth*.

समयः 49.58-52.10

जिज्ञासुः बाबा, अष्ट देव जो हैं रुद्र माला का मणका है, जन्म-जन्मान्तर राजा बनने वाला और लक्ष्मी जो है जन्म-जन्मान्तर की रानी बनने वाली।

बाबाः हैं?

जिज्ञासुः अष्टदेव रुद्र माला का मणका है और लक्ष्मी विजयमाला का मणका है।

बाबाः हां, जी।

जिज्ञासुः जन्म-जन्मान्तर की रानी बनने वाली।

बाबाः तो?

जिज्ञासुः तो वो अष्टदेवों में है या नहीं?

बाबाः देव पुरुष होता है कि स्त्री होती है?

जिज्ञासुः यहां तो आत्माओं की पढ़ाई है ना बाबा।

Time: 49.58-52.10
Student: Baba, the eight deities are beads of the *Rudramala* (the rosary of Rudra), who become kings for many births. And Lakshmi is the one who becomes a queen for many births.
Baba: What?
Student: The eight deities are beads of the *Rudramala*. And Lakshmi is a bead of the *Vijaymala* (rosary of victory).
Baba: Yes.
Student: She is the one who becomes a queen for many births.
Baba: So?
Students: Is she included among the eight deities or not?
Baba: Is *'dev'* (deity) a male or a female?
Student: Here it is the study of soul, isn't it?

बाबाः अरे, देव और देवी में अंतर नहीं है?

जिज्ञासुः तो तीन सीट्स जो फिक्स हो गयी वो लक्ष्मी के लिए नहीं लागू होती?

बाबाः वो तीन सीट्स में, उनमें कैटगरीज़ हैं। एक सबसे ऊँची सीट है, एक मध्यम है, एक नीची कैटगरी की है।

Website: www.pbks.info Email: a1spiritual1@gmail.com
YouTube: Adhyatmik Vidyalaya or AIVV

जिज्ञासु: तो दो सीट पहले जो फिक्स हुआ था वो लक्ष्मी नारायण के लिए हुआ था ना बाबा।
बाबा: हाँ जी। जो लक्ष्मी नारायण की सीट फिक्स हुई है उसमें भी नारायण ऊँचा है।
जिज्ञासु: लक्ष्मी नारायण की जो सीट फिक्स हुई है वो अष्टदेवों में तो उनकी काऊन्टींग नहीं है ना।
बाबा: नहीं। जो पहली सीट है ऊँचे से ऊँची जो शिव के साथ मिली हुई है, शिव का नाम जिसके साथ जोड़ा जाता है उसकी आठ कैटगरीज़ हैं जो अष्टदेव कही जाती हैं।
जिज्ञासु: तो दो तीन सीट जो फिक्स हुई है अष्टदेव के लिए लागू होता है?
बाबा: नहीं। दूसरी और तिसरी सीट देवतओं में है ही नहीं। वो सेकण्ड कैटगरी हो गई, थर्ड कैटगरी हो गई।

Baba: Arey, isn't there a difference between *dev* (deity) and *devi* (female deity)?
Student: So, [isn't the topic of] the three seats that have been fixed, applicable for Lakshmi?
Baba: There are categories among those three seats. One is the highest seat, one is the middle seat [and] one is of a lower category.
Student: So, the two seats that were fixed earlier were for Lakshmi and Narayan, weren't they?
Baba: Yes. Even among the two seats that are fixed for Lakshmi and Narayan, Narayan is higher.
Student: So, the seat that has been fixed for Lakshmi and Narayan; they are not counted among the eight deities, are they?
Baba: No, the first seat, the highest [seat] that has been combined with Shiv, the one with whom the name of Shiv is joined; there are eight categories in that, who are called the eight deities.
Student: So, [is the topic of] the three seats that are fixed applicable for the eight deities?
Baba: No. The second and third seat is not included among the deities at all. That is the second and the third category.

जिज्ञासु: तो अष्टदेव की कितनी सीट फिक्स हुई अब तक?
बाबा: आठ फिक्स होंगी। दो सीट फिक्स हुई हैं।
जिज्ञासु: दो किसकी-2 बाबा? एक जगदम्बा का और एक जगतपिता का ना।
बाबा: जगदम्बा कोई सूर्यवंश में है क्या?
जिज्ञासु: रूद्रमाला का मणका है ना।
बाबा: रूद्रमाला का मणका तो 108 सब धर्म वाले हैं लेकिन जगदम्बा सूर्यवंश की मुखिया है या चंद्रवंश की मुखिया है?
जिज्ञासु: चंद्रवंश की।
बाबा: फिर?
जिज्ञासु: तो दो सीट किसके लिए बाबा?
बाबा: जो दो सीट फिक्स हुई होंगी वो सूर्यवंश में से ही हुई होंगी या कोई दूसरे में से हुई होंगी?
जिज्ञासु: तो किसका-2? (किसीने कहा- नहीं बतायेंगे।)
बाबा: एक तुम्हारा, एक तुम्हारे साथी का।

Student: Then, how many seats among the eight deities have been fixed?
Baba: Eight seats will be fixed [in the future]. Two seats have been fixed [so far].
Student: Who are the two, Baba? One is of Jagadamba and the other is of Jagatpita (the father of the world), isn't it?
Baba: Is Jagadamba included among the *Suryavanshis* (those who belong to the Sun dynasty)?
Student: She is a bead of the *Rudramala*, isn't she?
Baba: The 108 beads, the souls belonging to all the religions are also beads of the *Rudramala*. But is Jagadamba the head of the Sun dynasty or of the Moon dynasty?
Student: Of the Moon dynasty.
Baba: Then?
Student: Then, [who are the ones] for whom the two seats are fixed?
Baba: The two seats that must have been fixed must be from the Sun dynasty only or will they be from some other [dynasty]?
Student: Then, whose seat [has been fixed]? (Someone said: He won't say.)
Baba: One is yours and the other is of your companion☺.

……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.